प्रथम अध्याय

हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास : स्वरूप और विवेचन

प्रथम अध्याय

'हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास : स्वरूप और विवेचन'

विषय प्रवेश

1.1 जीवनीपरक उपन्यास : स्वरूप एवं परिभाषा -

1.1.1 जीवनी

1.1.2 उपन्यास

1.1.3 जीवनीपरक उपन्यास

1.2 जीवनीपरक उपन्यास : उद्‌भव और विकास-

1.2.1 जीवनी साहित्य का विकास

अ) भारतेंदु युगीन जीवनियाँ

ब) द्‌विवेदी युगीन जीवनियाँ

क) द्‌विवेदी कालोत्तर जीवनियाँ

1.2.2 चरित्र-प्रधान उपन्यासों का विकास

1.2.3 जीवनीपरक उपन्यासों का आरंभ

1.2.4 जीवनीपरक उपन्यासों का विकास

1.3 जीवनीपरक उपन्यास के तत्त्व

1.3.1 कथावस्तु

1.3.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

1.3.3 कथोपकथन / संवाद

1.3.4 देश-काल-वातावरण

1.3.5 भाषाशैली

1.3.6 उद्‌देश्य

1.4 जीवनीपरक उपन्यासों की विशेषताएँ

1.5 हिंदी के महत्त्वपूर्ण जीवनीपरक उपन्यास

निष्कर्ष

प्रथम अध्याय

हिंदी की जीवनीपरक उपन्यास : स्वरूप और विवेचन

विषय प्रवेश :

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य में गद्य विधा का विकास हुआ है। तब से लेकर अनेकानेक नव्यतम एवं श्रेष्ठतम गद्य विधाएँ हिंदी साहित्य को प्रगल्भ एवं समृद्ध बना रही हैं। उनमें उपन्यास, कहानी, एकांकी, नाटक, निबंध, यात्रा-वर्णन, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण इ. महत्त्वपूर्ण विधायें हिंदी साहित्य के अंतर्गत चल पड़ी हैं। आधुनिक युग में अध्ययन का रूख स्थूलता से सुक्ष्मता की ओर बढ़ता हुआ दिखाई देता है। यही बात साहित्य को भी निर्विवाद रूप से लागू होती है।

'आचार्य रामचंद्र शुक्लजी ने 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' को वर्तमान हिंदी गद्य का प्रवर्तक माना है।'[1] उपन्यास विधा हिंदी साहित्य को आधुनिक युग की श्रेष्ठतम देन है। प्रेमचंद पूर्व काल में भारतेंदु युग में लाला श्रीनिवासदास लिखित 'परिक्षागुरू' (सन 1882 ई.) उपन्यास को अधिकांश समिक्षक हिंदी का अंग्रेजी ढंग का प्रथम उपन्यास मानते है।[2] इसके उपरांत हिंदी में अनेकों प्रकार के उपन्यास लिखे गए। जिनमें तिलस्मि, जासूसी, चरित्र-प्रधान, ऐतिहासिक, यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, जीवनीपरक उपन्यास ऐसे दर्जनों प्रकार हमारे सामने आते हैं।

उपन्यास साहित्य के अंतर्गत 'जीवनीपरक उपन्यास' स्वतंत्र विधा के रूप में उभर रही है। अनेक महान एवं प्रसिद्ध तथा अतित एवं वर्तमान के व्यक्तियों पर जीवनीपरक उपन्यास लिखे जा रहे हैं। आगे चलकर हम जीवनीपरक उपन्यास का स्वरूप एवं परिभाषा, उनका उद्भव आवैर विकास, उसके तत्त्व, विशेषताएँ, और हिंदी के महत्त्वपूर्ण जीवनीपरक उपन्यास इन मुद्दों का विस्तार के साथ अध्ययन व विवेचन करेंगे।

---

1. आ. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, (जयपुर, मलिक अॅण्ड कंपनी, नौवां. सं. 2007), पृ.323.
2. आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, (दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, ग्यारहवाँ सं.2011), पृ. 219.

1.1 जीवनीपरक उपन्यास : स्वरूप एवं परिभाषा :

जीवनीपरक उपन्यास हिंदी उपन्यास विधा की आधुनिक युग में विकसित हुई गद्य धारा हैं। इसके स्वरूप एवं परिभाषा के संबंध में समिक्षा या विवेचना बहुत कम मात्रा में प्राप्त होती है। इसके नाम में ही एक बात स्पष्ट होती है कि इसमें एक ओर चरित्रप्रधान उपन्यास विधा का एक रूप है, तो दूसरी ओर यह जीवनी विधा से भी संलग्न है। इसलिए जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप को जानने के लिए हमें जीवनी और उपन्यास के स्वरूप को जानना आवश्यक है।

1.1.1 जीवनी :

'जीवनी' शब्द का निर्माण 'जीवन' शब्द से हुआ है। यह शब्द स्पष्ट रूप से बोध कराता है कि वह किसी व्यक्ति के जीवन का आलेख है। हिंदी में 'जीवनी' शब्द अंग्रेजी के 'बायोग्राफी'[1] शब्द के पर्याय के रूप में प्रचलित है। जीवनी के प्रत्येक पक्ष के संदर्भ में विशद एवं विचारपूर्वक अभिमत प्रकट करनेवालों में 'शिप्ले' का नाम प्रमुख है। उनका कथन है, "जीवनी वह साहित्यिक विधा है, जिसमें नायक (किसी व्यक्ति विशिष्ट) के संपूर्ण जीवन अथवा उसके यथेष्ट भाग की चर्चा की गई हो। और जो आदर्श रूप में एक इतिहास हो।"[2]

हिंदी के विद्वानों ने भी इस संदर्भ में काफी आलोचना की हैं। प्रसिद्ध समालोचक 'बाबू गुलाबराय' लिखते हैं - "जीवनी घटनाओं का अंकन मात्र नहीं वरन् चित्रण हैं। वह साहित्य की विधा है। उसमें साहित्य एवं काव्य के सभी गुण हैं। वह मनुष्य के अंतर और बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरूपण है।"[3] 'डॉ. शांति खन्ना' का कहना हैं कि, "जब कोई लेखक वास्तविक घटनाओं के आधार पर श्रद्धेय व्यक्ति की जीवनी कलात्मक रूप से प्रस्तुत करता है तो साहित्य का वह रूप 'जीवनी' कहलाता है।"[4]

उपर्युक्त परिभाषाओं में डॉ. गुलाबराय ने जीवनी के साहित्यिक या कलात्मक गुणपर अधिक बल दिया है। डॉ. शांति खन्ना ने ऐतिहासिकता की ओर स्पष्ट संकेत किया है। इन विद्वानों की दृष्टि में जीवन साहित्य के अंतर्गत दो घटक अनिवार्य रूप से प्रतित होते हैं।

---

1. Biography.
2. Shiplay, Dictionary of World Literature, (London, Mackmilan, 9th edt. 1985), Pg. 39.
3. डॉ. गुलाबराय, काव्य के रूप, (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1964), पृ. 105.
4. डॉ. शांति खन्ना, आधुनिक हिंदी का जीवनीपरक साहित्य, (दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, प्र. सं.1973), पृ.31.

1. जीवनी किसी व्यक्ति के ऐतिहासिक पुष्ट प्रमाणों के परिप्रेक्ष्य में चित्रित अंतर्बाह्य चरित्र का आलेख है।

2. ऐतिहासिकता के साथ-साथ जीवनी के अंतर्गत साहित्यिक सौंदर्य की उपस्थिति भी आवश्यक है।

साहित्यिकता या कलात्मकता के अभाव में जीवनी एक ऐतिहासिक दस्तावेज बनकर रह जाएगी। उस तरह ऐतिहासिकता के अभाव में वह जीवनी विधा न रहकर उपन्यास की कोटि में जा पहुँचेगी।

डॉ. शांति खन्ना की उपर्युक्त परिभाषा में 'श्रद्धेय व्यक्ति' शब्द पर यहाँ विचार कर लेना आवश्यक है। हमारी अल्पमति से यदि जीवनी नायक के प्रति श्रद्धा-प्रासित होकर जीवनी लेखन किया गया, तो जीवनी की ऐतिहासिकता के प्रति पूर्ण निष्ठा का निर्वाह करने में बाधा उपस्थित हो सकती है। श्रद्धावान लेखक अपने जीवनी नायक या नायिका की उन ऐतिहासिक बातों की उपेक्षा कर सकता हैं, जो उसे श्रद्धाच्युत करती हो। इस संदर्भ में यह बात भी उल्लेखनीय है कि जीवनी साहित्य सिर्फ किसी साधु चरित व्यक्ति के संबंध में लिखा जाय, यह आवश्यक नहीं हैं। संसारभर के साहित्य में एक ओर जहाँ बुद्ध, महात्मा, मार्टिन ल्युथर किंग, अब्राहम लिंकन, मदर तेरेसा जैसे महान व्यक्तियों की जीवनियाँ लिखि गई हैं, वही दूसरी ओर हिटलर, सद्दाम हुसेन, औरंगजेब जैसे अहंकारी और युद्धपिपासुओं की जीवनियाँ भी लिखी हुई हैं। इसलिए हमारे विचार में जीवनी नायक का श्रद्धावान होना जरूरी नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हमारी दृष्टि से 'जीवनी साहित्य' की परिभाषा निम्नलिखित रूप में दी जा सकती है।

"किसी व्यक्ति का ऐतिहासिक तथ्यों के आधार उसके संपूर्ण जीवन या उसके यथेष्ठ भाग का किया गया साहित्यिक (कलात्मक) चरित्र-चित्रण ही जीवनी साहित्य है।"

1.1.2 उपन्यास :

हिंदी साहित्य में 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजी के 'नॉवेल'[1] शब्द के पर्याय के रूप में ग्रहण किया गया है। उपन्यास को लेकर पाश्चात्य एवं पौर्वात्य विद्वानों ने विपुल मात्रा में विचार

---

1. Novel.

प्रकट किए हैं। जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप को जानने के लिए उपन्यास के संदर्भ में कपितय विचारों का उल्लेख करना आवश्यक हैं।

उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचंद लिखते हैं - "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्रमात्र समझता हूँ। मानव चरित्रपर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूलतत्त्व है।"[1] प्रसिद्ध आलोचक नंददुलारे वाजपेयची के मतानुसार - "उपन्यास एक ऐसी काल्पनिक कृति है, जो गद्य के माध्यम से, आख्यान विशेष की सहायता से, सामाजिक जीवन के किसी स्वरूप का यथार्थ आभास देती हुई जीवन की मार्मिक व्याख्या करती है।"[2] बाबू गुलाबराय के अनुसार - "उपन्यास कार्यकारण शृंखला में बंधा हुआ एक गद्य कथानक है। जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार के साथ, वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रचनात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।"[3]

उपन्यास की उपर्युक्त परिभाषाओं पर दृष्टि डालने पर हमें उपन्यास विधा में निम्नांकित विशेषताएँ दिखाई देती हैं। -

1. उपन्यास मानवमात्र के वास्तविक जीवन की कल्पनामिश्रित कथा है।
2. इसमें मानवीय यथार्थ रहस्यों का उद्घाटन होता हैं।
3. यह गद्य में लिखि हुई साहित्यिक कलाकृति है।
4. इसका सामान्यत: विस्तार होता है।
5. यह अपने आप में परिपूर्ण होता है।

इन लक्षणों के परिसंदर्भ में हम कह सकते हैं, कि "उपन्यास वह गद्यात्मक साहित्यिक विधा है जो अपने विस्तार के साथ परिपूर्ण होते हुए, यथार्थ मानवीय जीवनचरित्रों के रहस्यों को खोलनेवाली, कल्पित कथानक पर आधारित होती है।"

---

1. प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1954), पृ. 39.
2. डॉ. एम. एस. झाडे, अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास, (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1996), पृ. 12.
3. वही, पृ. 12.

1.1.3 जीवनीपरक उपन्यास :

जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास का ही एक रूप है। इसके नाम से पता चलता है, कि इसमें जीवनी और उपन्यास विधा का सम्मिलन हुआ है। जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप को निम्नांकित परिभाषाओं द्वारा समझने का प्रयास करेंगे -

डॉ. लालासाहब सिंग के मतानुसार - "जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास विधा का वह रूप है, जो किसी व्यक्ति विशेष के वास्तविक जीवन चरित्र के आधार पर लिखा गया हों।"[1]

डॉ. सुरेश सिन्हा लिखते हैं - "जीवनीपरक उपन्यास हिंदी साहित्य की एक नूतन विधा है। जिसमें अतितकालिन पात्र, वातावरण एवं घटनाओं के ज्ञात तथ्यों को संभाव्य परिकल्पना के परिप्रेक्ष्य में, मनोवैज्ञानिक एवं कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।"[2]

इन परिभाषाओं के अनुसार जीवनीपरक उपन्यास में एक ओर जीवनी विधा की ऐतिहासिकता को समाहित किया जाता है और दूसरी ओर उसमें सर्जनशील उपन्यास विधा की स्वच्छंदता का समावेश मिलता है। यहाँ एक बात संस्मरणीय है, कि जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास ही है। जीवनी तो उसका विशेषण कहा जा सकता है। इसलिए उसमें ऐतिहासिक तथ्यों को अपेक्षाकृत गौण स्थान एवं औपन्यासिक शिल्प को महत्त्व दिया जाता है। जीवनीपरक उपन्यास किसी व्यक्ति के संपूर्ण जीवन या उसके यथेष्ट भाग की वास्तविक घटनाओं पर आधारित होता है। क्योंकि जीवनीपरक उपन्यास हमेशा अतितकालिन व्यक्तियों पर ही लिखे जाए, यह जरूरी नहीं है। आज कुछ उपन्यास वर्तमान के व्यक्तियों के आधार पर भी लिखें जा रहे हैं, जैसे कि, डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर ने 'सोनिया गांधी' पर 'परछाईयाँ' (सन 2006 ई.) और डॉ. राममनोहर लोहिया' पर 'अवधूत लोहिया' (सन 2009 ई.) जैसे उपन्यास लिखे हैं।"[3] तो इन उपन्यासों में उक्त दो नेताओं के जीवन का संपूर्ण ब्योरा आना असंभव हैं। जीवनीपरक उपन्यास के संपूर्ण पहलूओं को समझने के लिए आवश्यक है, कि उसके समग्र स्वरूप का विचार किया जाए। जैसा कि कहा गया है, कि जीवनीपरक उपन्यास के अंतर्गत

---

1. डॉ. लालसाहब सिंग, डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास, (इलाहाबाद, साहित्य-निलय प्रकाशन, प्र. सं. 1982), पृ. 42.
2. डॉ. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं. 1972), पृ. 42.
3. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागरजी से प्राप्त सामग्री के आधार पर।

जीवनी और उपन्यास इन विधाओं का सम्मिश्रण है। देखना यह है, कि जीवनी और उपन्यास के किन तत्त्वों में जीवनीपरक उपन्यास के तत्त्वों के साम्य-वैषम्य या अंतरावलंब कितनी मात्रा में निहित हैं। जीवनी और उपन्यास दोनों ही कथात्मक गद्य विधाएँ हैं। परम्परागत रूप से गद्य साहित्य को निर्धारित करने के लिए छः तत्त्व बताएँ जाते है। वह इस प्रकार है -

1) कथावस्तु, 2) पात्र एवं चरित्र-चित्रण, 3) कथोपकथन/ संवाद, 4) देश-काल-वातावरण, 5) भाषा एवं शैली और 6) उद्देश्य। इन तत्त्वों का हम आगे विस्तार से अध्ययन करेंगे। अन्य गद्य साहित्य की तरह जीवनीपरक उपन्यास में भी उपर्युक्त छः तत्त्व महत्त्वपूर्ण माने जाते है। इन्हीं तत्त्वों के माध्यम से हम जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप के बारे में अधिक जानकारी लेंगे।

1.2 जीवनीपरक उपन्यास : उद्भव और विकास :

जीवनीपरक उपन्यास के उद्भव और विकास को जानने से पहले जीवनी और उपन्यास विशेषतः चरित्रमूलक उपन्यास के उद्भव और विकास के बारे में संक्षेप में जानकारी लेना आवश्यक है। जीवनीपरक उपन्यासों का विकास जीवनी और चरित्रमूलक उपन्यास साहित्य से हुआ है।

1.2.1 जीवनी साहित्य का विकास :

डॉ. चंद्रवती सिंह ने अपने शोध-प्रबंध 'हिंदी साहित्य में जीवन-चरित्र का विकास' में संपूर्ण जीवनी साहित्य को निम्नांकित तीन युगों में विभाजित किया हैं।[1]

1. भारतेंदु युगीन जीवनियाँ (सन 1857 से 1900 ई.)
2. द्विवेदी युगीन जीवनियाँ (सन 1900 से 1920 ई.)
3. द्विवेदी कालोत्तर जीवनियाँ (सन 1920 से अब तक)

अ) भारतेंदु युगीन जीवनियाँ (सन 1857 से 1900 ई.)

इस काल में जीवनियाँ लेखन का प्रारंभ हुआ। इस काल में लगभग 50 जीवनियाँ हिंदी में प्रकाशित हुई। जिसमें कुछ प्रशासकों पर लिखी गई। जैसे 'कार्तिकप्रसाद खत्री' कृत 'अहिल्याबाई' और 'छत्रपती शिवाजी का जीवनचरित्र' इ.। इस काल की ज्यादा तर जीवनियाँ

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं.1972), पृ. 83.

साहित्यकारों से संबंधित है। जिनमें तुलसिदास, सूरदास, बिहारी आदि नाम बताएँ जाते हैं। इस काल में धर्म सुधारकों पर भी कुछ जीवनियाँ लिखि गई। जिनमें स्वामी दयानंद सरस्वती का नाम प्रमुख रूप से आता है। इस काल में जो जीवनियाँ लिखी गई, उन्होनें भविष्य के लेखकों और जीवनीपरक उपन्यासकारों को आकर्षित किया। "आज के समय में तुलसिदास, सूरदास, मीराबाई आदि पर जीवनीपरक उपन्यास हिंदी में प्रकाशित हो चुके है।"[1] तात्पर्य यह है, कि भारतेंदु युग के जीवनी साहित्य में हिंदी के भविष्यकालिन जीवनीपरक उपन्यासों के बीज दिखाई देते हैं।

ब) द्विवेदी युगीन जीवनियाँ (सन 1900 से 1920 ई) :

इस युग में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्र के नेताओं पर तीन सौ से अधिक जीवनियाँ लिखी गई। जिसमें शिवाजी भोसले, राणा प्रताप, अकबर, शंकराचार्य, भाष्यकार रामानुजाचार्य, भारतेंदु हरिश्चंद्र, गोपालकृष्ण गोखले, लाला लजपतराय, दादाभाई नवरोजी, मदनमोहन मालवीय आदि प्रमुख नाम गिनाए जा सकते है। इन सभी नेताओं पर हिंदी साहित्य में जीवनीपर उपन्यास उपलब्ध हैं।

क) द्विवेदी कालोत्तर जीवनियाँ (सन 1920 से अब तक) :

इस काल में भी करिब 400 जीवनियाँ हिंदी साहित्य में प्रकाशित हुई। इस काल की ज्यादातर जीवनियाँ राजनीति के नेताओं पर आधारित हैं। पं. नेहरू, राजेंद्र प्रसाद, चंद्रशेखर आझाद, भगतसिंग, लाल बहादूर शास्त्री, इंदिरा गांधी आदि पर जीवनियाँ लिखी गई। द्विवेदी युग और इस युग के बाद भी हिंदी साहित्यकारों के जीवन से संबंधित अनेक श्रेष्ठ कृतियाँ प्रकाशित हो रही हैं। इन जीवनियों में उत्तरोत्तर साहित्यिक सौंदर्य की वृद्धि हो रही है, जो जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप के निखार में सहायक सिद्ध हुई है।

1.2.2 चरित्रप्रधान उपन्यासों का विकास :

जीवनी साहित्य के साथ-साथ चरित्र-प्रधान उपन्यास साहित्य ने भी जीवनीपरक उपन्यासों को खासा प्रभावित किया है। ऐतिहासिक चरित्र-प्रधान उपन्यासों से ही जीवनीपरक उपन्यास विकसित हुआ है। इस दृष्टि से यहाँ ऐतिहासिक चरित्र-प्रधान उपन्यासों पर एक विहंगम दृष्टिपात कर लेना उचित होगा।

---

1. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागरजी से प्राप्त सामग्री के आधार पर।

हिंदी में उपन्यास साहित्य के विकास को प्रेमचंद के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। प्रेमचंदपूर्व युग में 'श्रद्धाराम किल्लोरी' कृत 'भाग्यवती' उपन्यास को हिंदी का प्रथम चरित्र-प्रधान उपन्यास माना जाता है।[1] इसी काल में श्री 'किशोरीलाल गोस्वामी' लिखित 'मस्तानी' और 'सुलताना रजिया बेगम' ऐसे उपन्यास हैं जिनमें भविष्यकालिन जीवनीपरक उपन्यासों के बीज पाये जाते हैं।

प्रेमचंद युग में प्रेमचंद कृत 'रंगभूमि' और 'भिखारिन'; प्रसाद का 'कंकाल'; जैनेंद्रकुमार का 'सुनिता'; भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा'; निराला का 'प्रभावती' आदि उपन्यासों के नाम चरित्रप्रधान उपन्यासों में लिए जाते हैं। इन उपन्यासों की चरित्र-चित्रण की पद्धति ने आगे चलकर हिंदी के जीवनीपरक उपन्यासों के चरित्र-चित्रण शैली के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रेमचंदोत्तर काल के कल्पना-प्रधान उपन्यास सामाजिक जीवन से संबंधित है। इस काल के जैनेंद्र कृत 'कल्याणी'; अज्ञेयकृत 'शेखर एक जीवनी'; यशपाल का 'दिव्या'; नागार्जून कृत 'बाबा बटेसरनाथ' इ. उपन्यासों को चरित्र प्रधान उपन्यासों में गिना जा सकता हैं।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं, कि प्रेमचंदोत्तर काल में ऐतिहासिक चरित्र पर लिखे गए उपन्यासों ने जीवनीपरक उपन्यास के लिए नींव का काम किया है। इस काल के उपन्यासों में वास्तविक जीवन के पात्र मिलते हैं। उदा. हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का 'बाणभट्ट की आत्मकथा'; रांगेय राघव कृत 'लोई का ताना'; विष्णुपंत शर्मा कृत 'चाणक्य की जय कथा'; रामकुमार भ्रमर कृत 'दूसरा सूरज'; माखनलाल चतुर्वेदी कृत 'महाभारती' आदि। यही वे उपन्यास हैं, जिन्हें हम जीवनीपरक उपन्यासों की श्रेणी में रखते हैं।

1.2.3 जीवनीपरक उपन्यासों का आरंभ :

जीवनीपरक उपन्यास साहित्य का विकास जीवनी साहित्य और चरित्रमूलक उपन्यास साहित्य से हुआ, यह हमने पूर्व विवेचन में जाना। अब जीवनीपरक उपन्यास का निश्चित आरंभ कहा से हुआ यह जान लेना आवश्यक है। डॉ. लालसाहब सिंग ' रांगेय राघव' को प्रथम जीवनीपरक उपन्यासकार मानते हैं। वे लिखते हैं - ''जीवनचरित्रात्मक लेखन डॉ. रांगेय

1. डॉ. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं.1972), पृ. 84.

राघव की मौलिक देन है। इससे पूर्व कपितय ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन-चरित्रात्मक उपन्यासों के लक्षण दिखाई देते हैं; किंतु उनमें ऐतिहासिक वातावरण की सजगता अधिक है। जीवन-चरित्रात्मक उपन्यास में लेखक की दृष्टि वातावरण की अपेक्षा कथा नायक पर अधिक होती है।''[1]

डॉ. लालसाहब सिंग के उपर्युक्त कथन से संपूर्ण सहमती जताना असमीचीन होगा। रांगेय राघव का पहला जीवनीपरक उपन्यास 'भारती का सपूत' सन 1954 ई. में लिखा गया। इससे पूर्व आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत 'बाणभट्ट की आत्मकथा' और वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'झाँसी की रानी : लक्ष्मीबाई' जैसे श्रेष्ठ जीवनीपरक उपन्यास सन 1946 ई. में ही प्रकाशित हुए हैं।

जीवनीपरक उपन्यासों का विकास ऐतिहासिक चरित्रप्रधान उपन्यासों से हुआ हैं। इस दृष्टिकोन से इसका उद्भव प्रेमचंदपूर्व काल के ऐतिहासिक उपन्यासों में खोजा जा सकता है। उस काल में किशोरीलाल गोस्वामी लिखित 'मस्तानी' (सन 1903 ई.) और 'सुलताना रजिया बेगम' (सन 1904 ई.) उपन्यासों में जीवनीपरक उपन्यासों की विशेषताएँ दिखाई देती हैं। प्रेमचंद लिखते हैं, ''मस्तानी उपन्यास में लेखक को मस्तानी के चरित्र-चित्रण में काफी सफलता मिली है।''[2]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं, कि जीवनीपरक उपन्यासों का उद्भव प्रेमचंद पूर्व भारतेंदु काल में ही हुआ है। 'मस्तानी' इस उपन्यास को हम हिंदी साहित्य का प्रथम जीवनीपरक उपन्यास मान सकते हैं और किशोरीलाल गोस्वामी को प्रथम जीवनीपरक उपन्यासकार।

1.2.4 जीवनीपरक उपन्यासों का विकास :

जिस काल में किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा 'मस्तानी' उपन्यास लिखा गया, वह उपन्यास साहित्य का शैशव काल ही था। इस कारण उस काल की अपरिपक्वता के चिह्न भी उपर्युक्त उपन्यासों में दिखाई देते हैं। उपन्यास के स्वरूप का समुचित निखार प्रेमचंद युग में दिखाई देता है। लेकिन इस काल में उल्लेखनीय जीवनीपरक उपन्यास प्रकाश में नहीं आये।

---

1. डॉ. लालसाहब सिंग, डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास, (इलाहाबाद, साहित्य-निलय प्रकाशन, प्र. सं. 1982), पृ. 48.
2. प्रेमचंद्र, प्रेमचंद कुछ विचार, (बनारस, सरस्वती प्रकाशन, प्र. सं.1946), पृ. 38.

प्रेमचंदोत्तर काल में कथानायक की ऐतिहासिक जीवनी को केंद्र में रखकर सन 1946 ई. में लिखा गया पहला उल्लेखनीय जीवनीपरक उपन्यास 'झाँसी की रानी : लक्ष्मीबाई' है।[1] जिसके लेखक वृन्दावनलाल वर्मा थे। इसी वर्ष संस्कृत के महान साहित्यकार बाणभट्ट के जीवन पर आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का 'बाणभट्ट की आत्मकथा' भी प्रकाशित हुआ।

उक्त दोनों उपन्यासों के पश्चात हिंदी साहित्य में जीवनीपरक उपन्यासों का सिलसिला चल पड़ा जो आज तक चालू है। एक प्रकार से वर्मा और द्विवेदी को जीवनीपरक उपन्यासों के प्रवर्तक कहना ठीक होगा।

उपर्युक्त दोनों उपन्यासों के बाद 'आ. चतुरसेन शास्त्री' कृत 'आलमगीर' (सन 1954 ई.) में प्रकाशित हुआ।[2] जो मुगल सम्राट औरंगजेब के जीवन पर आधारित था। इसी वर्ष भारतेंदु हरिश्चंद्र, तुलसिदास, कबीर, कृष्ण, बुद्ध के जीवनियों को चित्रित करनेवाले उपन्यास रांगेय राघव द्वारा लिखे गए। अब तक हिंदी में 50 से अधिक जीवनीपरक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं, लिखें जा रहे हैं। आज के समय में पौराणिक, ऐतिहासिक और वर्तमानकालिन जीवनीयों से संबंधित जीवनीपरक उपन्यास उपलब्ध होते हैं। इसमें साहित्य, संस्कृति, राजनीति, धर्मदर्शन के क्षेत्र में अमिट छाप छोडनेवाले लोगों पर जीवनीपरक उपन्यास लिखे गए हैं।

आधुनिक काल में डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर का नाम एक सशक्त जीवनीपरक उपन्यासकार के रूप में जाना जाता है। इनके अनेक जीवनीपरक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें 'नीले घोडे का सवावर', 'एकलिंग का दिवान', 'एक अंतहीन युद्ध' (महाराणा प्रताप पर), 'प्रेम दिवानी', 'श्यामप्रिया', 'न गोपी : न राधा', 'जोगिन' (मीराबाई पर), नेताजी बोस पर 'दिल्ली चलो', स्वामी विवेकानंद पर 'विवेकानन्द', डॉ.बाबासाहब आंबेडकर पर 'युगपुरुष अम्बेडकर', चैतन्य महाप्रभु पर 'गौरांग', बॅ. जिन्ना अली पर 'कायदे आजम', इंदिरा गांधी पर 'अतित होते वसंत', सोनिया गांधी पर 'परछाइयाँ' आदि महत्त्वपूर्ण जीवनीपरक उपन्यास बताए जा सकते हैं।[3]

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं.1972), पृ. 85.
2. वही, पृ. 86.
3. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर से प्राप्त सामग्री के आधार पर।

अत: यह कहना कतई गलत न होगा कि जीवनीपरक उपन्यास साहित्य में डॉ. भटनागर जी एक प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में हमारे सामने आते हैं। इनके अनेक जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास विधा को स्वतंत्र विधा के रूप में समृद्ध करने में कारगर सिद्ध हुए हैं।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं, कि जीवनीपरक उपन्यास अब निरंतर रूप से प्रकाशित हो रहे हैं। विविध क्षेत्र से संबंधित व्यक्तियों पर सशक्त जीवनीपरक उपन्यास लिखे जा रहे हैं, जिससे जीवनीपरक उपन्यास विधा तेजी से विकास की ओर अग्रेसर होती नजर आ रही है।

1.3 जीवनीपरक उपन्यास के तत्त्व :

1. कथावस्तु	4. देश-काल-वातावरण
2. पात्र एवं चरित्रचित्रण	5. भाषा एवं शैली
3. कथोपकथन/संवाद	6. उद्देश्य

1.3.1 कथावस्तु :

इस तत्त्व को मोटे तौर पर हम - कथानक और विषयवस्तु इन दो भागों में विभाजित कर सकते है।

कथानक :- सभी कथात्मक विधाओं में मानवीय जीवन से संबंधित अनेक छोटी-बड़ी घटनाओं की मालिका होती है। इन मालिकाओं का संयोजन ही कथानक कहलाता हैं। कथानक से संश्लिष्ट होकर ही विषयवस्तु प्रस्तुत होती है।

घटनाओं के संयोजन के बिना किसी भी कथा साहित्य को खड़ा करना मुश्किल है। जीवनीपरक उपन्यास के लिए कथानक पर्याप्त मात्रा में उपस्थित होना आवश्यक है। इसमें व्यक्ति विशेष के जीवन चरित्र को उजागर करने के लिए कथानक सर्वप्रथम आवश्यक तत्त्व है। इसमें सामान्य उपन्यास की तरह कथानक गढ़ लेने की पूर्ण स्वच्छंदता नहीं होती। लेखक अपने नायक के जन्म, जन्मकाल, तिथि, स्थान, उसके जीवन की विभिन्न घटनाओं को ऐतिहासिक सत्य के अनुसार ही प्रस्तुत करने में बाध्य होता है। जीवनीपरक उपन्यासकार अपने नायक के व्यक्तित्व विकास को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए कुछ संभाव्य घटना या प्रासंगिक कथा की स्थापना कर सकता है। कथानक मुख्य और गौण इन दो प्रकार के होते हैं।

विषयवस्तु :- विषयवस्तु संप्रेष्य है, जो कथानक के माध्यम से उपस्थित होती है। जीवनीपरक उपन्यास में विषयवस्तु नायक के जीवनचरित्र और व्यक्तित्त्व से संबंधित होती है। जीवनीपरक उपन्यास की विषयवस्तु नायक को केंद्र में रखकर उपस्थित होती है। तत्त्वों की प्रधानता की दृष्टि से जीवनीपरक उपन्यास चरित्र-प्रधान ही होते हैं।

1.3.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण :

पात्र :- जीवनीपरक उपन्यास में पात्रों का होना अनिवार्य है। व्यक्ति समाजशील प्राणी है। जीवनीपरक उपन्यास भले किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित हो, उसके साथ अन्य पात्रों का होना अनिवार्य है। जीवनीपरक उपन्यासकार अपने उद्‌देश्यों की पूर्ति के अनुसार पात्रों की संख्या का विस्तार कर सकता है। पात्रों के नामकरण में उसे ज्यादातर ऐतिहासिक तथ्य का ही सहारा लेना आवश्यक होता है।

चरित्र-चित्रण :- हर व्यक्ति अपने में किसी-न-किसी तरह के चरित्र की धारणा करता है। जीवनीपरक उपन्यास में नायक का चरित्र-चित्रण प्रमुखता से किया जाता है। अन्य पात्रों के चरित्र-चित्रण के समय ध्यान रखा जाता है, कि वह नायक से अधिक प्रभावशाली न बने। साथ ही अन्य पात्रों का चरित्र-चित्रण कथा-नायक के चरित्र विकास में सहायक हो।

जीवनीपरक उपन्यास में चरित्र-चित्रण के लिए बहिरंग एवं अंतरंग चित्रण प्रणाली इन दो पद्‌धतियों का उपयोग किया जाता है। बहिरंग प्रणाली में पात्रों के नामकरण, उनके प्रथम परिचय, आकृति-वेशभूषा वर्णन तथा क्रिया प्रतिक्रिया द्‌वारा चरित्र-चित्रण किया जाता है। अंतरंग प्रणाली के अंतर्गत अंत:प्रेरणाओं का चित्रण, अंतर्द्‌वंद्‌व का चित्रण तथा नाटकीय चित्रण आदि प्रकार बताए जा सकते हैं।

1.3.3 कथोपकथन / संवाद :

कुशल जीवनीपरक उपन्यासकार मुखर और मौन दोनों प्रकार के संवादों को बड़ी कुशलता के साथ चित्रित करता है। उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचंद लिखते हैं, "उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हों, लेखक की कलम से जितना कम लिखा जाए, उतना ही उपन्यास सुंदर होगा। प्रत्येक वाक्य जो किसी चरित्र के मुँह से निकले उसके चरित्र और मनोभावों पर प्रकाश अवश्य डालें। बातचित को स्वाभाविक, परिस्थिति के अनुकूल होना आवश्यक हैं।"[1]

1. प्रेमचंद : प्रेमचंद : कुछ विचार, (बनारस, सरस्वती प्रकाशन, प्र. सं. 1946), पृ. 20.

जीवनीकार उपन्यासकार कथ्य को प्रस्तुत करने के लिए वास्तविक घटनाओं के आधार अल्पांश में कल्पित संवादों की रचना कर सकता है।

जीवनीपरक उपन्यास में संवाद दो दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है : कथाविकास और पात्रों का चरित्र-चित्रण। घटनाओं की उपस्थिति दिखाने के लिए संवाद प्रभावी माध्यम है। संवादों द्वारा लेखक अपने पात्रों में चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन भी करता है। साथ ही चरित्र-चित्रण में नाटकियता उत्पन्न होती है। सामान्यत: संवादों में विश्वसनियता, संप्रेषणियता, संक्षिप्तता, सहजता, सरलता, प्रभावोत्पादकता आदि गुण आवश्यक हैं।

1.3.4 देश-काल-वातावरण :

कोई भी कथावस्तु किसी भी स्थान, काल और परिस्थितियों के अंतर्गत ही उपस्थित होती है। इसके बिना घटनाओं और चरित्रों की विश्वसनीयता प्रभावशाली ढंग से अंकित नहीं हो सकती।

डॉ. गुलाबराय के शब्दों में, "कथानक के पात्र भी वास्तविक पात्र के भाँति देश-काल के बंधन में रहते हैं। यदि वे भगवान के समान देश-काल से परे हो तो हम लोगों के लिए वो रहस्यमय हो जाऐंगे। इसलिए देश-काल का वर्णन आवश्यक हो जाता है।"[1]

वातावरण और परिस्थिति का चित्रण जीवनीपरक उपन्यास में विश्वसनियता के साथ-साथ रोचकता, मनोरंजकता और सजीवता निर्माण करने के लिए किया जाता है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के निर्माण में देश-काल-वातावरण का वर्णन अत्यावश्यक बात बन जाती है। साथ परिस्थितियों का चित्रण चरित्र-नायक की मनोवैज्ञानिक स्थिति के लिए पृष्ठभूमि का काम करता है।

1.3.5 भाषा एवं शैली :

भाषा एवं शैली साहित्य का आधार है। महाकवि तुलसीदास कहते है - "कविहि अरथ आखर - बलुसांचा।" शब्द और अर्थ का प्रयोग साहित्य के विभिन्न रूपों का निर्माण करता है। भाषा के प्रस्तुती के ढंग को ही शैली कहते है। कथा साहित्य में कभी लेखक अपनी भाषा का उपयोग करता है, तो कभी विभिन्न प्रकार के पात्र अपनी-अपनी भाषा के साथ

---

1. डॉ. गुलाबराय, काव्य के रूप, (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1964), पृ. 41.

पाठक सम्मुख प्रस्तुत होते हैं। ये दोनों भाषा लेखक की अपनी ही होती है। परंतु वह अपनी कला एवं शैली द्वारा यह आभास निर्माण करता है कि पात्रों की भाषा उनकी अपनी हैं।

जीवनीपरक उपन्यासों में शैली की विभिन्नता के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया जाता है। संवादशैली के प्रयोगाधिक्य के कारण विभिन्न पात्रों की योग्यता एवं अनुरूपता के अनुसार भाषा के रूप में परिवर्तन करना पड़ता है। जीवनीपरक उपन्यास का नायक एक ऐतिहासिक चरित्र होता है इस लिए उसकी भाषा में उसके चारित्रिक तथ्यों को संप्रेषित करने की गरिमा की उपस्थिति कराना आवश्यक है।

जीवनीपरक उपन्यासों में ऐतिहासिक, संवाद, आत्मकथनात्मक, पत्र, डायरी शैली इ. शैलीयों का प्रयोग किया जाता रहा है। आधुनिक काल में स्मृत्यानुप्रकाशी, चेतनाप्रवाह, मनोविश्लेषणात्मक आदि मनोवैज्ञानिक शैलीयों का विकास हुआ हैं। जीवनीपरक उपन्यासों में उपर्युक्त सभी भाषाशैलीयों का प्रयोग संभव हैं।

1.3.6 उद्देश्य :

हर रचना के निर्माण में कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। एक श्रेष्ठ साहित्यकार न मनोरंजन के लिए लिखता है न सिर्फ अपने कला के अविष्कार के लिए। वो अपनी कलाकृति के माध्यम से समाज को कुछ देना चाहता है। जीवनीपरक उपन्यासों में नायक के कार्यक्षेत्र के अनुसार भी उद्देश्य की निश्चिती होती है। सामाजिक क्षेत्र में काम करनेवाले किसी समाजसुधारक के जीवन-चरित्र के लेखन का उद्देश्य यह हो सकता है कि समाज उस चरित्र से प्रेरणा प्राप्त करें, विचारों के धन से जुड़े। सामाजिक बुराईयों को दूर करने हेतू उद्युक्त हो सकें। शिक्षा, संस्कृति, धर्म-दर्शन, राजनीति आदि क्षेत्र के महापुरुषों की जीवनी लेखन का भी प्राय: यह उद्देश्य होता है। समाज जिसे अनुचित मानता है, ऐसे चरित्र भी कभी-कभी साहित्य द्वारा सामने आते है। उदा. औरंगजेब, हिटलर आदि। ऐसे समय लेखक का उद्देश्य यह होता है, कि व्यक्ति अपनी प्रकृति-प्रदत्त व्यक्तित्व की विशेषताओं का कैसे दुरूपयोग करता है, यह दिखाना। साथ ही भूतकाल की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए समाज को सजग करना।

जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास विधा का एक अंग होने से न्यूनाधिक मात्रा में उपन्यास विधा के उद्देश्यों की व्यापकता और गरिमा को भी धारण करता है। इसमें ऐतिहासिक सत्य को प्रभावपूर्ण रूप से प्रदर्शित करना, समाज में आदर्श की स्थापना करना

आदि उद्देश्य बताये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त जीवनीपरक उपन्यासों द्वारा लेखक वर्तमानकालिन समाज की व्याख्या कर अनेक समस्याओं का अप्रत्यक्ष रूप से समाधान भी करता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं, कि आम तौर पर कथा साहित्य के लिए जो तत्त्व बताये गए हैं, वे सभी कुछ बदलाव के साथ जीवनीपरक उपन्यासों पर भी लागू पडते हैं। आखिर उपर्युक्त तत्त्वों के उपयोग से ही जीवनीपरक उपन्यास का निर्माण होता है। इनके अभाव में वह साहित्य उपन्यास न हो केवल जीवनी तक सीमित रह जाएगा। अंत में यह कहना असमीचीन न होगा कि, जीवनीपरक उपन्यास, उपन्यास ही है। जीवनीपरकता तो उसकी विशेषता कही जा सकती है।

1.4 जीवनीपरक उपन्यासों की विशेषताएँ :

आधुनिक युग में गद्य का विकास हुआ है। इसमें कथा साहित्य प्रमुखता से आता है। कथा साहित्य में अनेक विधाएँ चल पड़ी हैं, प्रचलित हो चुकी हैं। जीवनीपरक उपन्यास कथा साहित्य का ही एक अंग है। अत: कथा साहित्य की विशेषताएँ इसपर भी लागू होती है। जीवनीपरक उपन्यास जीवनी और उपन्यास साहित्य विधाओं के मेल से उत्पन्न हुई विधा है। इसलिए इसमें उपर्युक्त दोनों विधाओं की कुछ विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। सामान्यत: जीवनीपरक उपन्यासों की निम्न विशेषताएँ बताई जा सकती हैं। वे इस प्रकार हैं :

1. जीवनीपरक उपन्यास का आधार किसी व्यक्ति का वास्तविक जीवन चरित्र होता है।
2. जीवनीपरक उपन्यासों का कथानक ऐतिहासिक सत्य घटना और प्रसंग पर आधारित होता है।
3. जीवनीपरक उपन्यासों में जीवनी और उपन्यास विधा का सम्मिलन हुआ है।
4. जीवनीपरक उपन्यास की कथावस्तु नायक/नायिका को केंद्र में रखकर प्रस्तुत की जाती है।
5. जीवनीपरक उपन्यास चरित्र प्रधान होते हैं।
6. जीवनीपरक उपन्यास का नायक सामान्यत: ऐतिहासिक चरित्र होता है। कभी-कभी वर्तमान व्यक्तियों पर भी जीवनीपरक उपन्यास लिखे जाते हैं।
7. जीवनीपरक उपन्यास में विशिष्ट व्यक्ति का जीवन-आलेख प्रस्तुत किया जाता है।

8. जीवनीपरक उपन्यास के माध्यम से विशिष्ट व्यक्ति के अंतरंग, बहिरंग पहलू प्रकाश में आते हैं।

9. जीवनीपरक उपन्यासों के द्वारा सामान्यत: ऐतिहासिक चरित्र के विचारों को आधुनिक भावबोध के रूप में आदर्शवत रखा जाता है।

10. जीवनीपरक उपन्यासों में जीवनी साहित्य की सभी विशेषताएँ समाहित होती हैं, लेकिन उसमें औपन्यासिक विशेषताएँ भी होने के कारण उसका अस्तित्व जीवनी से नितांत भिन्न होता है।

11. जीवनीपरक उपन्यासों में भाषा की सभी शैलीयों का यथायोग्य प्रयोग किया जाता है।

12. जीवनीपरक उपन्यासों में चरित्रप्रधान उपन्यास की सारी विशेषताएँ दिखाई देगी; किंतु उसमें प्रमुख चरित्र ऐतिहासिक सत्य के आधार पर चित्रित होता है। इसलिए वह चरित्र-प्रधान उपन्यासों से कुछ हद तक अलग होता है।

13. जीवनीपरक उपन्यास सामान्यत: किसी न किसी ऐतिहासिक जीवन-चरित्र के आधार पर निर्मित होने के कारण ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में रखा जा सकता है। मगर हर एक ऐतिहासिक उपन्यास चरित्र प्रधान हो यह आवश्यक नहीं। इसलिए प्रत्येक ऐतिहासिक उपन्यास को हम जीवनीपरक उपन्यास नहीं कह सकते।

उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर हम यह कह सकते हैं, कि जीवनी विधा की विशेषताओं को समेटे हुए, ऐतिहासिक या वर्तमान के जीवनचरित्र के आधार पर लिखे गए चरित्र-प्रधान उपन्यास को हम जीवनीपरक उपन्यास कह सकते हैं।

1.5. हिंदी के महत्त्वपूर्ण जीवनीपरक उपन्यास :

हिंदी साहित्य में गद्य विधा में आज अनेक प्रकार के उपन्यासों का सृजन हो रहा हैं। इतिहास एवं वर्तमान की अनेक बड़ी हस्तियों को लेकर जीवनीपरक उपन्यास लिखे गए हैं, लिखें जा रहे हैं। उपन्यास साहित्य में 'जीवनीपरक उपन्यास विधा' स्वतंत्र रूप से चल पड़ी है। इसी विधा के कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यासों का परिचय हम संक्षेप में करेंगे।

* मस्तानी / कनक कुसुम (सन 1903 ई.)

हमारी दृष्टि से किशोरीलाल गोस्वामी कृत उपर्युक्त उपन्यास ही हिंदी का प्रथम जीवनीपरक उपन्यास है। यह एक लघु उपन्यास है। इसकी कथा 54 पृष्ठों तक सीमित हैं। महाराष्ट्र के पेशवा बाजीराव की प्रेयसी मस्तानी का जीवन-चरित्र इसमें अंकित हुआ है। डॉ. सुरेश सिन्हा के शब्दों में, "मस्तानी का चरित्र-चित्रण करने में लेखक को अपार सफलता प्राप्त हुई है। मस्तानी एक यवन बाला थी। उनका विवाह बाजीराव से करा कर लेखक ने हिंदू-मुस्लिम एकता का संकेत दिया है। यह नए युग का प्रभाव था।"[1]

* सूल्ताना रजिया बेगम / रंगमहल में हलाहल (सन 1904 ई.)

उपन्यास के लेखक भी श्री. किशोरीलाल गोस्वामी जी ही हैं। इसमें गुलाम वंश की प्रसिद्ध शासक रजिया बेगम के चरित्र को अंकित किया हैं। रजिया बेगम सन 1236 ई. में दिल्ली के सिंहासन पर आसिन हुई थी। इस उपन्यास की अधिकांश घटनाएँ इतिहास सम्मत है। इसमें रंगमहल के विलासी जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

* झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (सन 1946 ई.)

प्रेमचंदोत्तरकाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार 'वृन्दावनलाल वर्मा' इस उपन्यास के लेखक हैं। उपन्यास के सभी पात्र, घटनाएँ और स्थान ऐतिहासिक सत्यपर आधारित है। डॉ. सिन्हा के शब्दों में, "डॉ. वर्मा का दृष्टिकोन रानी के जीवन-चरित्र की प्रस्तुती के साथ-साथ 1857 ई. की इतिहास प्रसिद्ध क्रांति तथा उससे संबंधित पात्रों को भी प्रस्तुत करना है।"[2]

* बाणभट्ट की आत्मकथा (सन 1946 ई.)

इस उपन्यास के लेखक प्रसिद्ध आलोचक एवं उपन्यासकार आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जी हैं। डॉ. एम. एस. झाडे कहती है, "युद्ध के प्रश्न पर इस उपन्यास में विचार किया गया है। इस उपन्यास में भारतीय संस्कृति के गौरवपूर्ण अतित को आलोकित करने का प्रभावपूर्ण प्रयत्न हुआ है। कथा के संगठन एवं उद्भावित प्रसंगों द्वारा द्विवेदी जी के प्रगतिशील विचारों का भी परिचय मिलता है।"[3]

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं. 1972), पृ. 91.
2. वही, पृ. 91.
3. डॉ. एम. एस. झाडे, अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास, (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1996), पृ. 19

इस उपन्यास का कथा-नायक इतिहास समर्थित, संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठ साहित्यकार 'बाणभट्ट' है। इस उपन्यास की कथा वस्तु यद्यपि प्राचीनकालीन है; उसका संबंध बारहवी-तेरहवी शताब्दी के इतिहास पर आधारित है; किन्तु जिन जीवन सत्यों को संप्रेषित करने का प्रयास हुआ है, वे वर्तमान से संबंधित हैं।

*** आलमगीर (सन 1954 ई.)**

आ. चतुरसेन शास्त्री कृत इस उपन्यास का नायक सम्राट औरंगजेब है। इस उपन्यास में औरंगजेब के चरित्र की त्रूटियों के साथ मानवीय शान और कूटनितिज्ञ कौशल का भी यथास्थान रेखांकन किया गया है।

*** भारती का सपुत (सन 1954 ई.)**

डॉ. रांगेय राघव के सर्जित उपन्यासों में यह प्रथम कृति है। यह भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन संग्राम को प्रस्तुत करता है। डॉ. झाडे के मत से, "इस कृति के अंतर्गत राघवजी ने हरिश्चंद्र के शारीरिक सौंदर्य के साथ-साथ उनके रहन-सहन और उनकी मनोवृत्तियों, अभिरूचियों, उदारता, दानशीलता, विनोदप्रियता आदि का प्रभावशाली अंकन किया है।"[1]

*** लोई का ताना (सन 1954 ई.)**

उपर्युक्त उपन्यास के लेखक भी रांगेय राघव है, जिसमें कबीर के जीवन तथा दर्शन को चित्रित किया है। इसमें कबीर की मानवतावादी भूमिका प्रमुख है।

*** अहिल्याबाई (सन 1955 ई.)**

प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा इसके लेखक है। इन्दोर की महारानी अहिल्या के जीवन व आदर्श को यह उपन्यास प्रस्तुत करता है। इसमें अहिल्याबाई का मानवीय रूप मिलता है। डॉ. सिन्हा लिखते हैं, "अहिल्याबाई के व्यक्तित्त्व में स्नेह, ममता, सृजनशीलता, सहनशीलता, उदारता और प्रजाहित के लिए समर्पण की भावना कुट-कुट कर भरी हुई थी। यह एक प्रेरणादायक रचना है।"[2]

---

1. डॉ. एम. एस. झाडे, डॉ. अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास, (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1996), पृ. 19.
2. डॉ. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास, (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं.1972), पृ. 92

✽ माधवजी सिंधियाँ (सन 1956 ई.)

वृन्दावनलाल वर्मा के प्रस्तुत उपन्यास में ग्वाल्हेर के राजा माधव सिंधिया का जीवन चरित्र अंकित हुआ है। हिंदी उपन्यासों में वीर नायकों के चरित्र कम मात्रा में उपलब्ध होते है। उनमें माधव जी का स्थान अन्यतम है। डॉ. सुरेश सिन्हा के शब्दों में,

"शिल्प की दृष्टि से इस उपन्यास को सफल कहा जा सकता है। कथानक में रोचकता और कौतुहल निरंतर बनाए रखने में लेखक को सफलता प्राप्त हुई है।"[1]

✽ मेरी भव बाधा हरो (सन 1960 ई.)

उपर्युक्त कृति कवि बिहारीलाल के जीवन पर आधारित है। इसके लेखक हिंदी के प्रसिद्ध जीवनीपरक उपन्यासकार डॉ. रांगेय राघव हैं। इसमें बिहारीलाल के संपूर्ण जीवनयात्रा का वैविध्यपूर्ण चित्रण मिलता है।

"कवि बिहारीलाल सांसारिक तृष्णाओं से मुक्ति पा लेता है। कृष्ण की भक्ति में अपनी जीवन को समर्पित कर देता है। यही वह बिंदू है, जो बिहारी के जीवन की कालिमा को उज्वलता में परिणत कर देता है। उपन्यास के नामकरण में कवि बिहारी की यही परिवर्तित मानसिकता केंद्रिय रूप में अवस्थित रही है।"[2]

✽ मीराँ बावरी (सन 1963 ई.)

प्रस्तुत जीवनीपरक उपन्यास के लेखक श्री विरेंद्रमोहन रतुडी हैं। इसका निर्माण मनोरंजन एवं ज्ञान के उद्देश्य से हुआ है। इसका प्रमुख पात्र भक्तिकालिन संत कवयित्री मीरा है। इसमें लेखक ने प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर, इतिवृत्तात्मक शैली में मीरा का जीवनपट प्रस्तुत किया है।

✽ मानस का हंस (सन 1972 ई.)

यह रचना प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर जी की है। प्रस्तुत रचना हिंदी साहित्य की अमूल्य निधी है। इसमें तुलसी के जीवनपट को उजागर किया है।

---

1. डॉ. सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास (इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय सं. 1972), पृ. 93.
2. विपिन बिहारी ठाकुर (संपादक), साहित्य शब्दकोश, (दिल्ली, साहित्यप्रभा प्रकाशन, प्र. सं. 1923), पृ. 42.

डॉ. एम. एस. झाडे के शब्दों में, ''इसमें तुलसी का जन्म, संसार का परित्याग, गुरू एवं अध्ययन, मोहिनी प्रसंग, तीर्थाटन, वैराग्य आदि घटनाओं द्‌वारा तुलसी के विविधांगी व्यक्तित्त्व को प्रकाश में लाने का सुंदर प्रयास हुआ है। नागर जी ने अपने नायक की शैशव अवस्था से लेकर अंत तक के तमाम, कष्टों, पीड़ाओं, उपेक्षाओं, अपमानों, भर्त्सनाओं, आंतरिक द्‌वंद्‌वों, संघर्षों का यथास्थान अत्यंत हृदयग्राही वर्णन किया है। लेखक की यह रचना अत्यंत कलात्मक एवं विश्वसनीय है।''[1]

✽ दूसरा सूरज (सन 1981 ई.)

इसकी रचना रामकुमार भ्रमर द्‌वारा की गई है। उपर्युक्त उपन्यास में 1875 ई. के आसपास महाराष्ट्र में अंग्रेज शासन के विरूद्‌ध सशक्त विद्रोह करनेवाले क्रांतिकारी देशभक्त वासुदेव बळवंत फडके जी का चरित्रांकन हुआ है। निशिकांत ठकार के शब्दों में, ''ऐतिहासिक प्रमाणों के साथ संगति रखते हुए देशभक्ति की राष्ट्रीय प्रेरणा को लघु उपन्यास के साँचे में ढाल कर उसे सजीवता से प्रदर्शित किया गया है।''[2]

✽ नीले घोडे पर सवार (सन 1984 ई.)

प्रस्तुत रचना डॉ. भटनागर जी की है। यह उपन्यास महाराणा प्रताप के समग्र जीवन पर आधारित है। महाराणा प्रताप की महिमामय जीवनगाथा भारतीय जनमानस में आज भी अपनी अलग और अमिट छाप अंकित किए हुए है। महाराणा की ज्वलंत जीवन यात्रा को उसके फैले पुरे परिवेश में से पकडकर पृष्ठांकित करने का यह औपन्यासिक प्रयास अपने तरिके का पहला है। आजकल पत्रिका में लिखा है - ''नीले घोडे का सवार में महाराणा प्रताप की ऐसी ही ज्वलत गाथा को औपन्यासिक स्वरूप प्रदान किया है, जो इतिहास और मिथक के मेल से ही बन सकती थी।''[3]

✽ खंजन नयन (सन 1987 ई.)

अमृतलाल नागर के इस जीवनीपरक उपन्यास के नायक है, भक्तिकालिन संत कवि सूरदास। डॉ. झाडे की राय में, ''सूरदास के जीवनवृत्त के संदर्भ में ऐतिहासिक व्यापकता प्राप्त

---

1. डॉ. एम. एस. झाडे, अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास, (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1996), पृ. 30.
2. निशिकांत ठकार, समीक्षा (त्रैमसिक), (नई दिल्ली, जुलाई-सितंबर, 1995), पृ. 1
3. प्रो. विश्वंभर अरूण, आजकल (मसिक), (इलाहाबाद, जनवरी 1991), पृ. 26.

नहीं होती। इसी कारण इस उपन्यास में भी अनेक कल्पित घटनाओं द्वारा सूरदास के चरित्र-चित्रण का प्रयास हुआ है। इनमें लेखक को काफी हद तक सफलता प्राप्त हुई है।''[1]

* एकता के दूत शंकराचार्य (सन 1988 ई.)

डॉ. दशरथ ओझा का उपर्युक्त उपन्यास हिंदी साहित्य की उल्लेखनिय रचना है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने भारतीय एकता और अखंडता का संदेश दिया है। इस कृति में इतिहास और कल्पना का सहज समन्वय हुआ है। संक्षेप में यह उपन्यास चिरंतन और अद्यतन चुनौतियों का सामना करने में आचार्य शंकर की अद्वैत दृष्टि में अपरिमेय संभावना प्रस्तुत करता है।

* योगी अरविंद (सन 1990 ई.)

डॉ. भटनागर जी का प्रस्तुत उपन्यास अरविंद के जीवन के सभी पक्षों पर प्रभाव डालता है। ''महान चिंतक, पत्रकार, प्रोफेसर और पाश्चात्य सभ्यता के परिवेश में पले श्री.अरविंद अचानक योग की ओर कैसे झुक गए? क्या उन्हें भगवान कृष्ण ने अचानक दर्शन दिए? क्या वे उनकी अमृतवाणी सुन सके? इस प्रकार यह उपन्यास उनकी अलौकिक अनुभूतियों और दिव्य जगत का अंतर्पट खोलता हुआ, उनके जीवन के अनेक प्रश्नों के मर्म पर से पर्दा उठाता है।''[2]

* युगपुरुष आंबेडकर (सन 1994 ई.)

राजेंद्रमोहन भटनागर जी ने इस उपन्यास में आंबेडकर के अनेक पहलुओं का उद्घाटित किया हैं। महात्मा बुद्ध के बाद यदि किसी महापुरुष ने धर्म, समाज, राजनीति और आर्थिक धरातल, सामाजिक क्रांति से साक्षात्कार कराने का सार्थक प्रयास किया है, तो वे थे - डॉ. भिमराव आंबेडकर। अशोक प्रियदर्शी लिखते हैं, ''युगपुरुष आंबेडकर एक बेहद जरूरी किताब है। यह किताब एक साथ उपन्यास, इतिहास, जीवन चरित्र और समाजशास्त्र का आनंद देती है। 'युगपुरुष आंबेडकर' यह रचना बडी तल्लीनता एवं निष्ठा के साथ हुई है।''[3]

---

1. डॉ. एम. एस. झाडे, अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास', (इलाहाबाद, अमन प्रकाशन, प्र. सं. 1996), पृ. 31.
2. डॉ. भटनागर जी से प्राप्त सामग्री के आधार पर।
3. अशोक प्रियदर्शी, रांची एक्सप्रेस (दैनिक), (रांची, 30 मार्च 1995), पृ. 04.

✻ दिल्ली चलो (सन 1997 ई.)

डॉ. भटनागरजी के प्रस्तुत उपन्यास में अतुल्य देशभक्त नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जीवन यात्रा को पन्नों में समेटा गया है। साथ ही यह उपन्यास समग्र स्वतंत्रता संग्राम समझने की कुंजी है। नेताजी की अंतिम ईच्छा थी, कि देश को शीघ्रतिशीघ्र आझाद कराये और एक नये, शक्तिशाली तथा श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के साथी भारत को विश्व के सामने खड़ा करें। उपन्यास में एक प्रखर देशभक्त की छवि हमारे सामने आती है।

✻ न गोपी न राधा (सन 1998 ई.)

'न गोपी न राधा' भटनागरजी का एक अप्रतिम उपन्यास है। मीरा न गोपी थी न राधा। वह मीरा ही थी। अपने आप में मीरा होने का जो अर्थ-सौभाग्य है, वह न गोपियों को मिला था और न राधा को। वह अर्थ सौभाग्य क्या था? यही इस उपन्यास का मर्म है। मीरा को लकर भटनागरजी ने और तीन उपन्यास लिखे है - प्रेम दीवानी, श्यामप्रिया और जोगिन। अचरज की बात यह है, कि यह सभी उपन्यास कथ्य, चरित्र और भाषा शैली में एक-दूसरे से भिन्न है। प्रस्तुत उपन्यास में मीरा का चरित्र एक वीर क्षत्राणी व समर्पिता भक्तिन के रूप में हमारे सामने आता है।

✻ अमृतघट (सन 2003 ई.)

लेखक भटनागर जी के 1978 ई. में इन्हीं के लिखे गए 'सूरश्याम' उपन्यास का यह संशोधित संस्करण है।

अमृतलाल नागर कहते हैं, "डॉ. भटनागर का 'सूरश्याम' एक साथ मन बाँधने में सफल सिद्‌ध हुआ है। इसे पढ़ते हुए मुझे आनंद और शक्ति की अनुभूति होती है।"[1]

✻ विवेकानन्द (सन 2003 ई.)

प्रख्यात उपन्यासकार डॉ. भटनागर जी ने उस अमर व्यक्तित्त्व को जन-जन तक पहुँचाने का सार्थक प्रयत्न किया है, जो भारतीय नवजागरण के अग्रदूत माने जाते हैं। तन, मन और आत्मा में ऐक्य स्थापित कर स्वामी विवेकानंद ने न केवल अपने स्वरूप को जाना; बल्कि जन-जन को उसके लिए 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक रूको नहीं', का शाश्वत मंत्र दिया।

---

1. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर, अमृतघट, (नई दिल्ली, इरावदी प्रकाशन, प्र. सं. 2008), पृ. 7.

"भारतीय नवजागरण के अग्रदूत स्वामी विवेकानंद पर लेखक का यह सृजन हिंदी साहित्य के साथ समाज को भी एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।"[1]

✱ सरदार (सन 2004 ई.)

लोहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल पर आधारित यह उपन्यास के लेखक है डॉ.भटनागर। वे इस रचना के बारे में लिखते है, "मैंने आज की आवश्यकताओं को देखते हुए इस उपन्यास की रचना की है। आज की पीढ़ी को उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। मैंने उनके जवानी के स्वरूप को इसमें केंद्रबिंदु बनाया है।"[2]

प्रस्तुत उपन्यास में पटेल जी के जीवन-चरित्र द्वारा लेखक ने उनकी राष्ट्रीय एकात्मता की भावना को उजागर किया है। इस बारे में पंजाब केसरी लिखता है, "राजेंद्र मोहन का यह इतिहास परक उपन्यास सरदार पटेल के लोहपुरुष वाले आवरण के पीछे छिपी राष्ट्रप्रेम और गहरी मानवीय संवेदनाओं से सराबोर शक्सीयत की तस्वीर पेश करता है।"[3]

✱ कायदेआजम (सन 2006 ई.)

प्रस्तुत रचना राजेंद्र मोहन भटनागर की एक प्रमुख औपन्यासिक कृति है। इस कृति में दर्शाया गया है, कि जिन्ना मजहबी नहीं थे। न उन्हें कुरआन की चिंता थी न मस्जिद की। लेकिन उनका हश्र मजहब विशेष के दायरे में सिमटकर सामने आया। प्रस्तुत उपन्यास जिन्ना के अनेक रहस्यों का उद्घाटन करता हुआ उनकी जिंदगी को अधयाय-दर-अध्याय खोलता है।

✱ परछाईयाँ (सन 2006 ई.)

यह उपन्यास सोनिया गांधी के व्यक्तित्व पर आधारित है। सोनिया व राजीव का प्यार इस उपन्यास की प्राणशक्ति है। इस उपन्यास में सोनिया जी का चित्रण एक संभ्रांत पारिवारिक महिषी के रूप में हुआ है।

इस तरह के और कई जीवनीपरक उपन्यास हैं, जो निरंतर रूप से लिखे जा रहे हैं। जिससे 'जीवनीपरक उपन्यास विधा' एक सशक्त स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित होती नजर आ रही है।

---

1. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर, विवेकानंद, (दिल्ली, राजपाल प्रकाशन, द्वितीय सं. 2007), मुखपृष्ठ।
2. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर, दैनिक परिक्रमा, (दिल्ली, 11 नवंबर 2002), पृ. 2.
3. योगेश गुप्त, पंजाब केसरी (दैनिक), (दिल्ली, 27 अगस्त 2002), पृ. 11.

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन तथा विश्लेषण से कहा जा सकता है, कि जीवनीपरक उपन्यास साहित्य की वह विधा है, जिसमें साहित्यिक रचना के सभी गुण विद्यमान है। जीवनीपरक उपन्यास का आधार सत्य होता है। इस साहित्य के माध्यम से समाज के सामने एक आदर्श की प्रस्तुती का प्रयास रहता है। कई बार अतित कालीन घटनाओं और महापुरुषों के विचारों को वर्तमानकालिन भावबोध के रूप में हमारे सामने रखा जाता है।

समाज को जीवनयापन करते हुए हमेशा एक नायक की अपेक्षा रहती है, जिसका वह अनुगमन कर सकें। यदि वास्तविक जीवन में वे आदर्श उसे ना मिले तो, वह उस हिरो को कल्पना में या फिल्मी जगत में देखता है और उसी का अनुगमन करने लगता है।

समाज की उन्नति एवं संस्कृति रक्षण के लिए आवश्यक है कि उसके सामने वास्तविक जीवन के आदर्श रखे जाए। इस दिशा में साहित्यकार एक दिपस्तंभ के समान भूमिका निभा सकता है। इस दिशा में जीवनीपरक उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण रचना प्रकार बन के हमारे सामने आता है।

जीवनीपरक उपन्यासों के द्वारा सिर्फ ऐतिहासिक या पौराणिक ही नहीं; बल्कि वर्तमान के भी आदर्शवत व्यक्तित्वों को समाजसम्मुख रखने की जरूरत है। जिससे समाज समुदाय अपना हर कदम आदर्शवत दिशा में रख सकें। इस दृष्टि से जीवनीपरक उपन्यास विधा से हम भारी मात्रा में आशा-अपेक्षा रख सकते हैं। आखिर साहित्य निर्माण का मूल उद्देश्य समाजहित में ही निहित है।